सामाजिक विज्ञान

भाग–I

भूगोल

अध्याय 1

हमारा भारत

भारतीय उपमहाद्वीप

भारत एशिया महाद्वीप के दक्षिण में स्थित एक अलग ही स्वतंत्र भौगोलिक प्रदेश के रूप में नज़र आता है। इसके उत्तर–पश्चिम में किर्थर, सुलेमान और हिन्दूकुश पर्वत श्रृंखलाएँ हैं, जहाँ से उत्तर–पूर्व तक हिमालय पर्वत श्रृंखला विद्यमान है। उत्तर–पूर्व में आराकान योमा की पहाड़ियाँ जो पश्चिम म्यांमार में बंगाल की खाड़ी के तट के साथ–साथ दक्षिण से उत्तर की ओर बढ़ते हुए हिमालय से मिल जाती है। ये ऊँची और दुर्गम पर्वत श्रृंखलाएँ शेष एशिया से भारतीय उपमहाद्वीप को अलग करती हैं। दक्षिणी भारत एक प्रायद्वीप विस्तार है जिसके पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर तथा दक्षिण में हिन्द महासागर है। दक्षिण एशिया के इस प्रदेश की हर दिशा अभेद्य और दुर्गम्य होने से इस क्षेत्र को भारतीय उपमहाद्वीप कहा जाता है। ऐसा सतत् विस्तृत भू–भाग जो प्रायः चारों ओर से विशाल जलराशि से घिरा हो महाद्वीप के नाम से जाना जाता है। जबकि महाद्वीप में ही स्थित ऐसा प्रदेश जो भौगोलिक, सांस्कृतिक या पर्यावरणीय दृष्टि से स्वतः पूर्ण हो, उपमहाद्वीप कहलाता है। नीचे दिये गए मानचित्र में भारतीय उपमहाद्वीप की पहचान कीजिए।

एशिया महाद्वीप में भारतीय उपमहाद्वीप की स्थिति

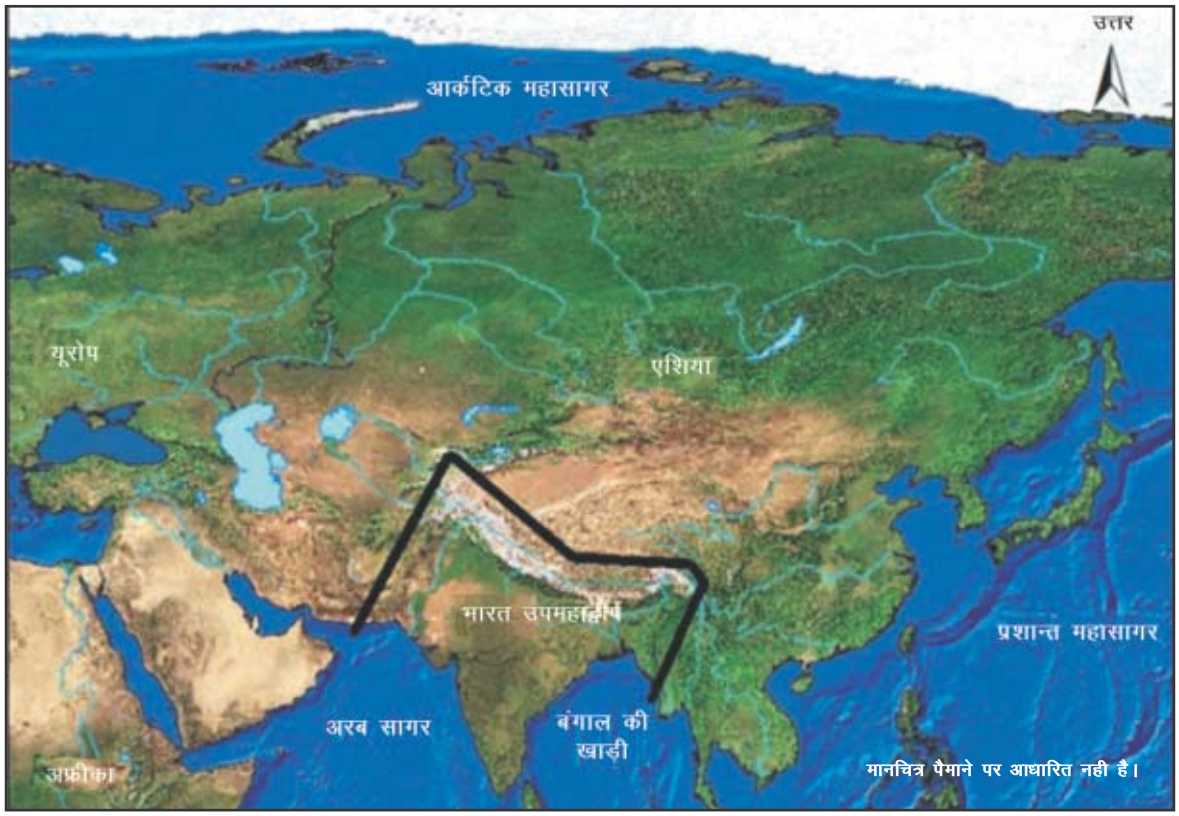

उपर्युक्त मानचित्र से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय उपमहाद्वीप भौगोलिक रुप से एशिया महाद्वीप का एक विशिष्ट प्रदेश है। इसकी भौगोलिक स्थिति और बनावट ने इसे एक विशिष्ट मानसूनी

जलवायु प्रदान की है। इस कारण से इसे 'मानसूनी प्रदेश' भी कहा जा सकता है।

उत्तर में हिमालय की ऊँची पर्वत श्रृंखलाएँ भारतीय उपमहाद्वीप में वर्षा कराने में सहायक है। साथ ही साईबेरिया से आने वाली ठंड़ी हवाओं से हमारी रक्षा करती हैं। हिमालय और हिंदुकुश पर्वत श्रृंखलाओं की अनुपस्थिति में भारतीय उपमहाद्वीप एक विस्तृत मरुस्थल होता। इन्हीं पर्वतों से निकलती नित्यवाही नदियों से गंगा–सिंधु और ब्रह्मपुत्र के विस्तृत मैदानों की रचना हुई हैं, जिनके आँचल में प्राचीन सिंधु और गंगा घाटियों की सभ्यताओं का विकास हुआ।

भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिम और उत्तर–पूर्व में ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं के बीच कई संकरी घाटियाँ या दर्रे मौजूद हैं। इन्हीं दर्रों के रास्ते से विभिन्न कालों में विदेशी मानव भारतीय उपमहाद्वीप पहुँचा। इनमें खैबर व बोलन प्रमुख दर्रे हैं। उत्तर में स्थित दर्रों से तिब्बत के रास्ते खुले। पूर्वोत्तर के दर्रों द्वारा म्यांमार के श्यान पठार से विदेशी मानव उत्तर–पूर्वी क्षेत्रों में आया और बाद में भारत के अन्य क्षेत्रों में फैल गया।

अलग–अलग समय में विभिन्न मानव समुदाय अपनी–अपनी संस्कृतियों के साथ भारतीय उपमहाद्वीप में आते रहे। कुछ अपने से पहले बसे समुदायों के साथ घुल–मिल गए और कुछ दूसरों ने अपनी पहचान अलग से बनाये रखी। अलग–अलग संस्कृतियाँ, बोलियाँ, धार्मिक विश्वास व काम करने के तरीकों का प्रभाव कालांतर में एक दूसरे पर पड़ता रहा। इस तरह भारतीय उपमहाद्वीप में संस्कृतियों के विकास के साथ जहाँ सांस्कृतिक अनेकता का सिलसिला बना, वहीं प्रभावशाली सभ्यताओं ने विभिन्न संस्कृतियों के बीच आदान–प्रदान के द्वारा इन्हें एक सूत्र में बाधंने का काम भी किया।

विश्व मानचित्र पर भारत की स्थिति

भारत विश्व में उत्तरी–पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है। दक्षिण से उत्तर की ओर भारत की मुख्य भूमि का अक्षांशीय विस्तार 8°4′ उत्तर से 37°6′ उत्तरी अक्षांशों के बीच है। पश्चिम से पूर्व तक भारत का देशान्तरीय विस्तार 68°7′ पूर्व से 97°25′ पूर्वी देशान्तरों के बीच है। भारत का देशान्तरीय विस्तार लगभग 29° होने के कारण इसके पूर्व व पश्चिमी भाग के स्थानीय समय में लगभग दो घण्टों का अन्तर पड़ता है। आप जानते हैं कि 82°30′ पूर्वी देशान्तर रेखा से भारत का मानक समय माना जाता है जो इलाहाबाद के निकट से गुजरती है।

क्या आप जानते हैं?
जनसंख्या की दृष्टि से भारत चीन के बाद विश्व का दूसरा बड़ा देश है। जहाँ विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 17.5 प्रतिशत (लगभग 121.01 करोड़) भाग पाया जाता है।

भारत विश्व में क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवाँ बडा देश है। हमारे देश का कुल क्षेत्रफल 32.9 लाख वर्ग किलोमीटर है, जो सम्पूर्ण विश्व के स्थल भाग के 2.47 प्रतिशत भाग पर फैला है। भारत का विस्तार उत्तर में जम्मू–कश्मीर से दक्षिण में कन्याकुमारी (तमिलनाडु) तक 3214 किलोमीटर एवं पूर्व में अरूणाचल प्रदेश से पश्चिम में गुजरात तक 2933 किलोमीटर है। भारत में क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान सबसे बड़ा राज्य है जबकि गोवा सबसे छोटा राज्य है।

प्रशासनिक क्रियाकलापों को सुविधाजनक बनाने के लिए देश को 29 राज्यों एवं 7 केन्द्रशासित प्रदेशों में बाँटा गया है। दिल्ली भारत की राजधानी है। 2 जून 2014 को आन्ध्रप्रदेश का विभाजन कर 29 वाँ

आओ करके देखें–

उपर्युक्त भारत के मानचित्र को देखकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. भारत के रूपरेखा मानचित्र में सभी राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों सहित दर्शाइए।
2. अपने शिक्षक की सहायता से सभी राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों की राजधानी का पता लगाइए।
3. भारत के तटवर्ती क्षेत्र में स्थित राज्यों की पहचान कर उनकी सूची बनाइए।
4. भारत के पड़ौसी देशों की सूची बनाइए।

राज्य 'तेलंगाना' बनाया गया है। प्रशासनिक कार्यों को सुविधाजनक बनाने के लिए राज्यों को पुनः जिलों में विभाजित किया गया है।

भारत के भौतिक प्रदेश

भारत एक विशाल देश होने के कारण इसमें अनेक भौतिक विविधताएँ विद्यमान हैं। कहीं ऊँचे पर्वत तो कहीं समतल मैदान, कहीं असमान पठार तो कहीं तटीय मैदान, कहीं मरुस्थल तो कहीं द्वीप समूह स्थित हैं। अतः भारत को छः प्रमुख भौतिक प्रदेशों में बाँटा जा सकता है, जो निम्नलिखित हैं–

1. उत्तरी और उत्तरी–पूर्वी पर्वतीय प्रदेश (हिमालय पर्वत)
2. गंगा का मैदानी प्रदेश
3. दक्षिण का प्रायद्वीपीय पठार
4. तटीय मैदान
5. थार का मरूस्थल
6. द्वीप समूह

इनमें से तटीय मैदानों का अध्ययन हमनें कक्षा 7 के अध्याय–7 'विभिन्न परिवेशों में मानव जीवन' में किया है तथा थार के मरुस्थल का अध्ययन हम अगले अध्याय में करेंगे। आइए! अन्य प्रदशों का अध्ययन हम इस अध्याय में करते हैं।

उत्तरी और उत्तरी–पूर्वी पर्वतीय प्रदेश– भारत के उत्तर और उत्तरी–पूर्वी भाग में लगभग 2500 किलोमीटर लम्बी हिमालय पर्वत श्रृंखला स्थित है। यह विश्व की सबसे ऊँची व नवीन पर्वत श्रृंखला है। विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत शिखर भी यहीं स्थित है। ऊँचाई के कारण इसका अधिकांश भाग बर्फ से ढका रहता है। इसलिए इसे हिमालय (हिम+आलय अर्थात् बर्फ का घर) कहा जाता है। हिमालय पर्वत दक्षिण से उत्तर की ओर क्रमशः तीन समानांतर श्रेणियों शिवालिक, मध्य हिमालय या हिमाचल और सबसे उत्तर में हिमाद्री या वृहत हिमालय में बँटा हुआ है। उत्तर–पश्चिम से लेकर पूर्व में अरुणाचल प्रदेश तक विस्तृत हिमालय की श्रेणियाँ दक्षिण दिशा में मुड़कर पूर्वोत्तर की असम–म्यांमार पर्वत श्रेणी की पटकोई और नागा पहाड़ियों में मिल जाती हैं।

क्या आप जानते हैं?
हिमालय में तिब्बत व नेपाल की सीमा पर स्थित माउंट एवरेस्ट विश्व की सबसे ऊँची पर्वत चोटी है जिसकी ऊँचाई औसत समुद्र तल से 8848 मीटर है।

हमारे देश में कृषि और अन्य आवश्यकताओं हेतु सतत् जलापूर्ति के लिए इन पर्वत श्रेणियों का महत्वपूर्ण योगदान है। हिमालय और पूर्वोत्तर पर्वत श्रृंखलाओं की स्थिति और बनावट हिन्द महासागर से आने वाली आर्द्र मानसूनी पवनों को रोक कर भारत में वर्षा कराने में सहायक है। भारत के अधिकांश भू–भाग पर मानसूनी पवनों से वर्षा होती है। इन पर्वतीय प्रदेशों में उत्तर और पूर्वोत्तर भारत की सभी सदानीर नदियों का उद्गम स्थल है। जल संसाधन से संपन्न ये पर्वतीय प्रदेश कई बहुउद्देशीय नदी–घाटी परियोजनाओं के जनक हैं, जिनसे बिजली, सिंचाई और सघन जनसंख्या वाले शहरों के लिए जल का प्रबंधन होता है। यहाँ की वन सम्पदा अभूतपूर्व जैविक विविधता संजोये हुए है। इनकी ढलानों पर चाय और फलों के विस्तृत बागान हैं तो निम्न घाटियों में फूलों और सब्जियों के खेत हैं। यहाँ पाई जाने वाली ज़ड़ी-बूटियों की मांग समस्त

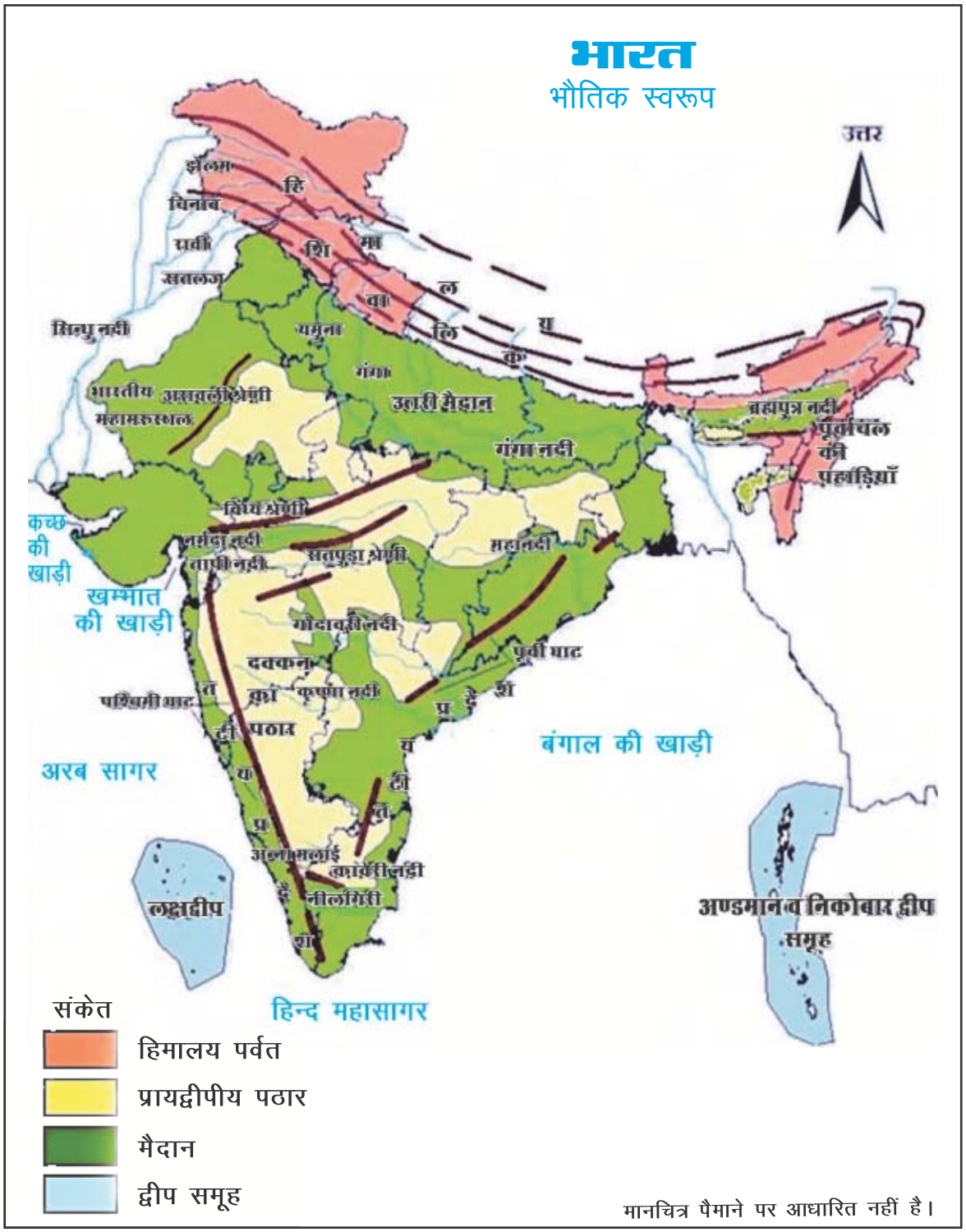

विश्व में है। पर्यटन के प्रमुख केंद्र यहाँ स्थित हैं। इस क्षेत्र के निवासियों की आजीविका यहाँ की जल और वन संपदाओं पर निर्भर है।

इन प्रदेशों में वनों की अंधाधुंध कटाई और अन्य संसाधनों के अतिदोहन के कारण यहाँ भू–स्खलन, मृदा का तीव्र अपरदन आदि से पारिस्थितिकी तन्त्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। प्राकृतिक और मानवीय सम्पदाओं से संपन्न ये प्रदेश अनियोजित और विचारहीन मानवीय क्रियाकलापों के कारण विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक और पर्यावरणीय अवनयन से ग्रसित हैं।

आओ करके देखें–

अपने शिक्षक की सहायता से भारत के भौतिक मानचित्र में देखकर क्रमशः दक्षिण से उत्तर की ओर हिमालय की श्रेणियों को पहचानिए और इन श्रेणियों में से सबसे दक्षिण एवं सबसे उत्तर में स्थित श्रेणियों के नाम लिखिए।

गंगा का मैदानी प्रदेश–हिमालय के समानान्तर दक्षिण में उत्तर का विशाल मैदानी प्रदेश स्थित है। यह गंगा– सतलज व ब्रह्मपुत्र और उनकी सहायक नदियों के द्वारा हिमालय से बहाकर लाई गई मिट्टी से बना है। नवीन जलोढ़ मिट्टी के कारण यह भारत का सबसे उपजाऊ भू–भाग है। भारत में सर्वाधिक कृषि इसी मैदान में की जाती है। इसे भारत का 'अन्न भंडार' भी कहा जा सकता है। इस मैदान में स्थित अपेक्षाकृत ऊँचे भाग जहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ का पानी नहीं पहुँचता है वहाँ पुरानी जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है, उसे 'बांगर' कहा जाता है। इसके उदाहरण मुख्यतः मैदान के पश्चिमी हिस्से में देखें जा सकते हैं। इसके विपरित ऐसे नीचले भाग जहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ का पानी पहुँच कर नवीन जलोढ़ मिट्टी बिछाता है, उसे 'खादर' कहा जाता है। इसके उदाहरण मुख्यतः मैदान के पूर्वी हिस्से में हैं। हिमालय के पर्वतपदीय क्षेत्र में कंकड़ पत्थर से निर्मित पतले मैदानों को 'भाबर' एवं दलदली मैदानों को 'तराई' कहा जाता है।

प्राचीन काल में विभिन्न नदी–घाटी सभ्यताओं की उत्पत्ति और विकास इन्हीं मैदानों में हुआ है। समतल, उपजाऊ मिट्टी, अनुकूल और पर्याप्त वृष्टि के कारण भारत की सर्वाधिक जनसंख्या इन मैदानी भागों में रहती है। इस मैदानी भू–भाग में परिवहन व उद्योगों का काफी विकास हुआ है।

दक्षिण का प्रायद्वीपीय पठार–गंगा के मैदान के दक्षिण में त्रिभुजाकार आकृति में दक्षिण का पठार स्थित है जिसे भारत का प्रायद्वीपीय पठार भी कहते हैं। इसकी उत्तरी सीमा पर विन्ध्य पर्वत श्रेणी, उत्तर–पश्चिम में अरावली, पश्चिम में पश्चिमी घाट की पहाड़ियाँ, (सह्याद्री) स्थित हैं। पूर्व में पूर्वी घाट की पहाड़ियों के अपरदित अवशेष हैं। दक्षिण में नीलगिरी और अन्नामलाई पर्वत स्थित हैं। पथरीले व उबड–खाबड़ धरातल वाले इस क्षेत्र में कई छोटे पठार जैसे दक्कन और छोटानागपुर के पठार व पर्वत स्थित हैं। भारत की अधिकांश खनिज सम्पदा इसी पठार में पाई जाती है। दक्कन के लावा पठार की उपजाऊ मिट्टी हमारे देश में कपास के उत्पादन के लिए महत्त्वपूर्ण है।

क्या आप जानते हैं?

दक्षिण का प्रायद्वीपीय पठार भारत का सबसे बडा, सबसे प्राचीन व सबसे कठोर भौतिक प्रदेश है। विश्व की सबसे पुरानी अरावली पर्वत श्रृंखला इसी पठार का हिस्सा है।

प्रायद्वीप भारत के तटीय इलाकों में दक्षिणी पठारी प्रदेश के दोनों ओर तटीय मैदान स्थित हैं। जिनका निर्माण यहाँ की विभिन्न पर्वत श्रेणियों से निकली नदियों और समुद्री क्रियाओं द्वारा हुआ है। इस क्षेत्र की महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी और नर्मदा आदि नदियों ने लगातार अपरदन और निक्षेपण क्रियाओं

द्वारा अपनी घाटियों में विस्तृत मैदानों का निर्माण किया है।

पठार के आंतरिक क्षेत्रों में वर्षा की कमी और अनियमितता के कारण कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। फ़िर भी जल संचयन की पारंपरिक पद्धति, सिंचाई के साधनों के विकास तथा शुष्क कृषि के वैज्ञानिक तकनीक में विस्तार के कारण यहाँ कृषि की वर्षा पर निर्भरता धीर–धीरे समाप्त हो रही है। फलस्वरूप कृषि उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई है।

प्रदेश के कुछ इलाकों में घनी वन संपदा है। रबड़, चाय, कॉफी के बागान के अलावा यह प्रदेश मसालों के लिये मशहूर है। मध्यकाल से ही भारत के प्रचुर मात्रा में उपलब्ध मसालों ने पश्चिमी एशिया और यूरोप के व्यापारियों को आकर्षित किया है। देश की अधिकतर जनजातीय आबादी विन्ध्यांचल, सतपुड़ा, मैकाल, छोटानागपुर और सह्याद्री की पहाड़ियों तथा वनों में रहती है।

आओ करके देखें–

भारत के गंगा के मैदान एवं प्रायद्वीपीय पठार में स्थित राज्यों की पहचान कर उनकी सूची बनाइए।

द्वीप समूह–अरब सागर एवं बंगाल की खाड़ी में भारत के द्वीप समूह स्थित है। बंगाल की खाडी में स्थित 247 द्वीपों का समूह अंडमान एवं निकोबार कहलाता है। उत्तरी द्वीपों के समूह को अंडमान एवं दक्षिणी द्वीपों के समूह को निकोबार कहा जाता है। अंडमान के बैरन द्वीप पर भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी स्थित है। निकोबार में स्थित इंदिरा पॉइन्ट भारत का सबसे दक्षिणी द्वीप है। अरब सागर में स्थित 36 द्वीपों के समूह को लक्षद्वीप कहते हैं। लक्षद्वीप का अर्थ है एक लाख द्वीप। पर्यटन की दृष्टि से ये द्वीप बहुत प्रसिद्ध हैं।

सांस्कृतिक परिदृश्य

कश्मीर से कन्याकुमारी तक और गुजरात से अरुणाचल प्रदेश तक भारत एक अनूठा और विविधताओं से भरा देश है। मानव के जीवन जीने के ढंग को संस्कृति कहा जाता है। सभ्यता मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति का सूचक है, जबकि संस्कृति मानसिक क्षेत्र की प्रगति का द्योतक। अर्थात् हमारे रहन–सहन, सोच–विचार, पहनावा, खान–पान, नृत्य–संगीत, धार्मिक विश्वास, दर्शन, भाषा एवं साहित्य आदि का मिला–जुला तानाबाना ही संस्कृति है। यह सांस्कृतिक विविधता ही हमारी विरासत है।

भाषा

भारत में 2001 की जनगणना के अनुसार 122 भाषाएँ और 234 मातृभाषाएँ हैं। इनमें से 22 भाषाओं को संवैधानिक दृष्टि से अनुसूचित भाषाओं का दर्ज़ा दिया गया है। प्रायः ये भाषाएँ देश के विभिन्न प्रान्तों और समुदायों की प्रमुख भाषा हैं। मातृभाषा वह भाषा है जिसका उपयोग व्यक्ति की माँ ने व्यक्ति के बचपन में बात करने के लिए किया है।

हमारे देश के अलग–अलग प्रदेशों में अलग–अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। जैसे पंजाब में पंजाबी, ओडिशा में उड़िया, तमिलनाडु में तमिल, महाराष्ट्र में मराठी, गुजरात में गुजराती आदि। कई भाषाएँ बहुत छोटे समुदायों द्वारा बोली जाती हैं। देश में भाषाई विविधता को देखते हुए आज़ादी के बाद अधिकतर राज्यों

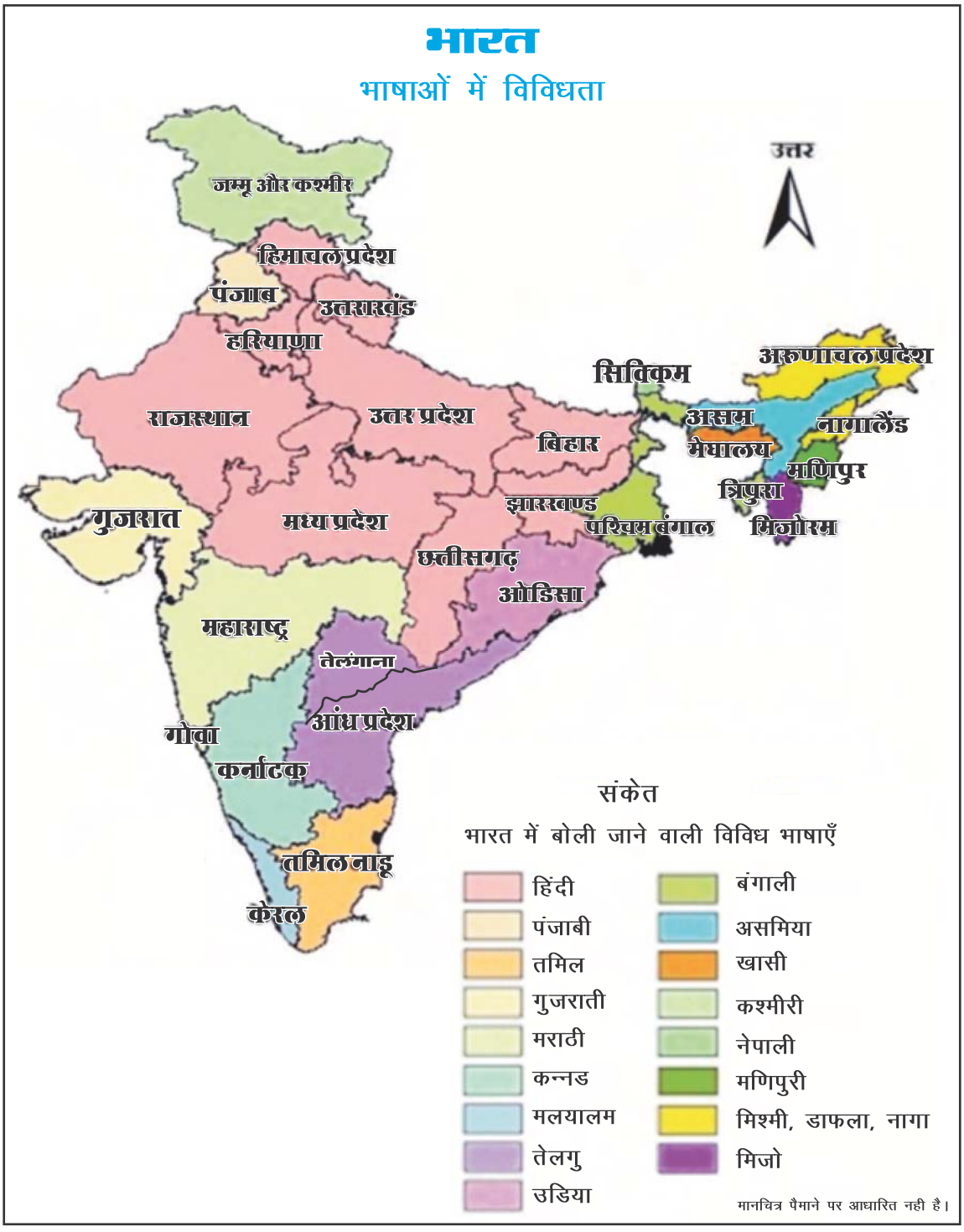

आओ करके देखें–

उपर्युक्त भारत के मानचित्र को देखकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. कौनसी भाषा सर्वाधिक राज्यों में बोली जाती है? राज्यों के नाम लिखिए।
2. भारत में बोली जाने वाली भाषाओं की राज्य के अनुसार सूची बनाइए।

को भाषा के आधार पर पुनर्गठित किया गया ताकि हर राज्य अधिकारिक रुप से प्रदेश की आम जनता की भाषा में सरकारी काम–काज कर सकें।

धर्म

भारत में विश्व के प्रायः सभी धर्म और धार्मिक सम्प्रदायों के अनुयायी रहते हैं। इनमें प्रमुख हिंदू (78.8%), मुसलमान (14.2%), ईसाई (2.3%), सिक्ख(1.7%), बौद्ध (0.7%) और जैन (0.4%) हैं। हिंदू, जैन और सिक्ख धर्मों के अनुयायी मुख्यतः भारत में ही निवास करते हैं। विश्व की कुल मुसलमान आबादी का एक बड़ा भाग भारत में रहता है। भारत कई धर्मों का जन्म स्थल भी है जैसे हिंदू, बौद्ध, जैन, सिक्ख आदि। विभिन्न धर्मावलंबियों की उपस्थिति भारत की सांस्कृतिक विविधता को समृद्ध बना देती है।

जनजाति समूह

आदिकाल से जब विभिन्न मानव समुदाय भारतीय उपमहाद्वीप में पहुँचे और धीरे–धीरे समस्त भारत में विसरित हुए तब भारत के विस्तृत और विविध भौगोलिक परिस्थितियों और ऐतिहासिक घटनाक्रमों के कारण कुछ समुदाय दुर्गम स्थानों में जाकर बस गए। ये दुर्गम स्थान पहाड़ और जंगल में स्थित थे। कालांतर में प्राकृतिक दुर्गम्यता के कारण उन पर नदी–घाटियों में विकसित हो रही सभ्यताओं का आंशिक प्रभाव पड़ा। इसके कारण सामाजिक विकास की प्रक्रिया में वे मैदान में बसे कृषक और नगरीय समाज के मुकाबले पिछड़ गए। ऐसे समुदाय जो दुर्गम इलाकों में रहते हैं उन्हें भारत में जनजाति कहते हैं। गोंड, भील, संथाल, ओरांव, सहरिया, नागा, मिरी, आदी, डाफला आदि कई जनजातीय समूह पश्चिम में गुजरात और राजस्थान से लेकर पूर्व में पश्चिमी बंगाल तक तथा पूर्वोत्तर राज्यों में रहते हैं। मैदानी क्षेत्रों में इनकी उपस्थिति नगण्य है। सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से यह देश का सबसे कमज़ोर समुदाय है।

विविधता में एकता

भारत में अनेक सांस्कृतिक विविधताएँ हैं, फिर भी ज़रुरत इस बात की है कि हम चाहे किसी भी मजहब, भाषा, जाति या समुदाय के हों, दूसरों की संस्कृति का सम्मान करें। भारत में इतनी अधिक भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विविधताएँ होने के बावजूद भी यह एकता के सूत्र में पिरोया हुआ है। इसीलिए कहा जाता है कि 'अनेकता में एकता, भारत की विशेषता'।

शब्दावली

प्रदेश	–	समान विशेषताओं वाले विस्तृत क्षेत्र।
दुर्गम्यता	–	जहाँ आसानी से जाया ना जा सके।
धर्मावलंबी	–	किसी धर्म विशेष को मानने वाला।
आजीविका	–	जीवन निर्वाह के लिए किया गया कार्य।
बहुउद्देशीय	–	अनेक उद्देश्यों को पूरा करने वाला।

अभ्यास प्रश्न

1. **सही विकल्प को चुनिए–**

   (i) **निम्नलिखित में से किस देश की सीमा भारत से नहीं मिलती है–**

   (क) नेपाल **(ख) भूटान**

   (ग) इरान **(घ) म्यांमार** **( )**

   (ii) जनसंख्या की दृष्टि से विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है–

   (क) चीन (ख) भारत (ग) अमेरिका (घ) जापान ( )

2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

   अ. भारत विश्व में क्षेत्रफल की दृष्टि से ..... बड़ा देश है।

   ब. सन् 2014 में आन्ध्रप्रदेश का विभाजन कर 29 वाँ राज्य ..... बनाया गया है।

   स. अरब सागर में 36 द्वीपों के समूह को ..... कहते हैं।

   द. हिमालय विश्व की सबसे ऊँची एवं ..... पर्वत श्रृंखला है।

3. भारत को उपमहाद्वीप क्यों कहा जाता है? कारण बताइए।

4. नदी घाटी परियोजनाओं को बहुउद्देश्यीय क्यों कहा जाता है?

5. भारत की जलवायु पर हिमालय के प्रभाव बताइए।

6. भारत के प्रमुख धर्म कौन–कौन से हैं? सूची बनाइए।

7. भारत को कितने भौतिक प्रदेशों में बाँटा गया है? उनकी विशेषताएँ बताइए।

8. भारत को अनेकताओं में एकता वाला देश क्यों कहा जाता है? समझाइए।